गांधी लाठी पर हिन्दी

हिन्दी साहित्य और समाज की षड्यंत्र-कथा

संजीव चंदन

''लोकतांत्रिक भारत के हिन्दी स्पेस की यह कहानी अभी अर्धविराम पर ही है। कहानियों और इतिहास का पूर्णविराम होता भी नहीं है। ब्राह्मणवादी तंत्र अपने ढंग से पीढ़ी-दर-पीढ़ी विकसित होता है।''

'आइये और निकालिये इन बेहूदों को मेरे घर से, भोसड़ी के,'
कुलपति उर्फ साहित्यकार के भीतर का पुलिसिया
गाली-गलौच कर रहा था।

वयं सर्वाः कश्चित् कथायां दुष्टाः स्मः
कुछ अपनी कहानी संभाल नहीं पाये, सरेआम
हो गयी हकीकत की तरह। कुछ ने संभाला,
तो हकीकत भी गल्प बनकर रह गयी।

शैक्षणिक जगत पर धीरे-धीरे आरएसएस अपना फैलाव करता ही जा रहा है। जो नियुक्तियां की जा रही हैं उनपर संघ की नजर होती है। जो पहले से नियुक्त हैं उनमें से कई यू-टर्न ले चुके हैं। विश्वविद्यालयों में 'मोदी@20' पर बातचीत हो रही है। जेएनयू में संघ का एजेंडा लागू करने वाले कुलपति अब यूजीसी के चेयरपर्सन हैं।

The Marginalised Publication

ISBN- 978-81-977558-8-0

9 788197 755880

₹ 350/-

गांधी लाठी पर हिन्दी

संजीव चंदन

The Marginalised Publication

पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी तरह से इस्तेमाल
के लिए लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

प्रकाशक : द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन
28-एच, कृष्णा विहार, फेज-2, लोनी,
गाजियाबाद-201102 (उ.प्र.)
: सी-401, मंगलम विहार अपार्टमेंट,
आरा गार्डन रोड, पटना-800014
: पंजीकृत कार्यालय, सानेवाड़ी, वर्धा
महाराष्ट्र-442001
ईमेल : themarginalised@gmail.com
संपर्क : +91-8130284314
कॉपीराइट © : द मार्जिनलाइज्ड

प्रथम संस्करण : 2024
कवर, लेआउट : साकिब अशरफी
मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

ISBN : 978-81-977558-8-0

GANDHI LATHI PAR HINDI
Written by SANJEEV CHANDAN

अनुक्रम

1.	जीटी एक्सप्रेस की जंजीर	11
2.	केरल एक्सप्रेस से भेजा गया एस.एम.एस सन्देश	16
3.	खाली स्लेट	20
4.	एक इंद्र और एक बृहस्पति	25
5.	इंसान के पैरों और धरती में होड़!	32
6.	का पर करूं सिंगार, पिया मोर आंधर	41
7.	यौन उत्पीड़न और विशाखा समिति की मांग	50
8.	खिचड़ी, आरक्षण और दीक्षाभूमि	60
9.	जे.एन.यू. के ब्रह्मपुत्र छात्रावास में प्रवास और विश्वविद्यालय से लम्बी लड़ाई की शुरुआत	69
10.	उस बच्ची के हाथ से गुलाब लेकर राष्ट्रपति शर्मसार होते!	76
11.	बच्चा बिगड़ गया है	88
12.	जिसको भी देखना हो हजार बार देखो	93
13.	डायरी में दर्ज समय और षड्यंत्र का कतरा	103
14.	वह भागते हुए धरना स्थल पर आयी थी... उस पर यौनिक हमले की कोशिश की गई थी	124
15.	दारोगा, उर्फ कोतवाल उर्फ पुलिसिया कुलपति	130
16.	दिल्ली की रस्साकसी	135
17.	अकादमिक गतिशीलता, लेकिन ब्राह्मणवाद का पुनरोदय	142
18.	एक कमरा, कमरे में बैठे तीन लोग और भारत की संसद	150
19.	वह शत्रु है कि मित्र, कौन तय करेगा?	156
20.	वह दौर जिसमें सब बदहवास थे	161

21. एक राजनीतिक समय का चरित्र पक्ष-विपक्ष का संयोग होता है 173
22. देवी प्रसन्न नहीं हुईं, न देवता : स्त्री अध्ययन 'प्रयागराज' की शरण में 178
23. हिन्दी समय पर ब्राह्मणवादी नर्तन अपने शबाब पर 187
24. वयं सर्वाः कश्चित् कथायां दुष्टाः स्मः 190

परिशिष्ट

25. अशोक वाजपेयी क्या बिल्ली के गले में घंटी बांधेंगे? 198
26. विश्वविद्यालय के ब्राह्मणवादी चरित्र की पुष्टि है अनीस का निलंबन 202
27. फेसबुक पोस्ट 207
28. हिन्दी साहित्य जगत का खम ठोक जातिवाद 240

अपनी बात

ब्लडी विश्वविद्यालय नहीं सुधारे जा सकते।' अर्जुन सिंह से हमारे मिलने की व्यवस्था करने के बाद अनिल चौधरी ने कहा था। वे हमें सावधान कर रहे थे। उनका अनुभव बोल रहा था। उन्हें शायद पता हो कि जिन प्रफुल्ल बिदवई के साथ हम अर्जुन सिंह के घर जाने वाले हैं, वे भी बीएचयू की कार्यपरिषद् की बैठकों में या तो कम जाते हैं या जब जाते हैं तो कुलपति के निर्णयों पर हस्ताक्षर से अधिक हस्तक्षेप नहीं करते।

अनुभव मायने रखता है। अनुभव की यह कथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की कथा है, हिन्दी साहित्य-समाज की कथा है, या मेरी आत्मकथा है- मेरे जीवन के एक हिस्से की कथा! इस कथा में कोई भी पात्र काल्पनिक नहीं है और कोई भी घटना यथार्थ से परे नहीं है। हो सकता है कि यथार्थ की विद्रूपता जितनी है, उसे व्यक्त करने में मेरी लेखकीय क्षमता चूक गयी हो। यथार्थ का विद्रूरूप जितना यहां व्यक्त है, वास्तव में उससे अधिक घटित है।

इस कथा के पात्र ग्रे शेड्स के हैं। 'हिन्दी समय' में सक्रिय। यहां वे जैसी और जिन भूमिकाओं में हैं वह उनका संपूर्ण है, कोई जरूरी नहीं! हो सकता है मेरे हिस्से में उनका यही सच आया हो, दूसरों ने उन्हें कुछ और सच के साथ देखा हो। हाथी का सच सिर्फ उसकी सूंड नहीं होती और न ही उसके कान या पूंछ पूरे हाथी को समग्रता में पेश कर पाते हैं। वयं सर्वाः कश्चित् कथायां दुष्टाः स्मः!

इस कथा में, आत्मकथा में कुछ भी दो पाटों, दो सिलसिलों में घटित नहीं है। विचारों के फार्मूले से बिलकुल अलग होते हैं यथार्थ। कोई प्रगतिशीलता को अपने सम्पूर्ण जीवन में लबादे की तरह ओढ़ सकता है और सारे धत्तकर्मों का सूत्रधार हो सकता है। जरूरी नहीं कि राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक नैतिकता का 'चमकता चेहरा' अपने मेक अप के भीतर भी वही हो। सबकुछ एक रणक्षेत्र की तरह